Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 7

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

16 फरवरी 2016 ई 18 जमादिल अव्वल 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

जिस सिलसिले में अब्दुल लतीफ जैसे सच्चे और इल्हाम पाने वाले ख़ुदा ने पैदा किए जिन्होंने जान भी इस राह में कुर्बान कर दी और ख़ुदा से इल्हाम पाकर मेरी पुष्टि की ऐसे सिलसिले पर आरोप करना क्या यह तक्वा में सम्मिलित है एक नेक प्रकृति सालेह ज्ञान वालों का एक झूठे इंसान के लिए इतना आशिकाना जोश कब हो सकता है .....

अब्दुल लतीफ शहीद मरहूम वह सच्चा और मुत्तकी ख़ुदा का बन्दा था जिस ने ख़ुदा के रास्ते में न अपनी पत्नी की परवाह की न बच्चों की न अपनी प्रिय जान की। ये लोग हैं जो हक्कानी उलमा हैं जिनकी बातें और कर्म अनुकरण के योग्य हैं। जिन्होंने अंत तक ख़ुदा की राह में अपनी सच्चाई निभाई।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

17। वां निशान- मौलवी साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ साहिब शहीद का इल्हाम कि यह व्यक्ति सच्चाई पर है मसीह मौऊद भी है और उसके साथ कई निरन्तर खुवाबें थीं जिन्होंने मौलवी साहब महोदय को वह दृढ़ता प्रदान की कि आख़िर उन्होंने मेरी पुष्टि के लिए काबुल की जमीन में अमीर काबुल के आदेश से जान दी उन्हें कई बार अमीर ने अनुरोध किया कि उस व्यक्ति की बैअत अगर छोड़ दो तो पहले से भी ज्यादा आप का सम्मान किया जाएगा। मगर उन्होंने कहा कि जान को ईमान पर प्राथमिकता नहीं रख सकता। आख़िर उन्होंने इस रास्ते में जान दी और कहा कि इस रास्ते में ख़ुदा की इच्छा के लिए जान देना पसंद है। तब वह पत्थरों से मारे गए और ऐसी दृढ़ता दिखलाई कि एक आह भी उनके मुंह से न निकली और चालीस दिन तक उनकी लाश पत्थरों में पड़ी रही और फिर एक मुरीद अहमद नूर नामक ने उनकी लाश दफन की और कहा गया है कि उनकी कब्र से अब तक मुशक की ख़ुशबू आती है और एक बाल उनका इस जगह पहुंचाया जिस से अब तक मुशक की ख़ुशबू आती है और हमारे बैतुद्दुआ के एक कोने में एक शीशे पर लगा है। अब ज़ाहिर है कि यदि यह कोरोबार मात्र झूठ का धोखा था तो शहीद मरहूम इतने दूरदराज़ दूरी से क्यों मेरी सच्चाई के विषय में इल्हाम हुए और क्यों लगातार खुवाबें आईं। वह तो मेरे नाम से भी बेख़बर थे केवल ख़ुदा तआला ने उन्हें मेरी ख़बर दी कि पंजाब में मसीह मौऊद पैदा हो गया तब उन्होंने पंजाब की ख़बरों की जांच शुरू की और जब यह पता मिल गया कि वास्तव में एक व्यक्ति कादियान संबंधित पंजाब ज़िला गुरदासपुर में मसीह मौऊद होने का दावा करता है, तब सब कुछ छोड़ कर मेरी ओर भागे और लगभग दो महीने यहां रहे और फिर लौटने पर दुष्ट मुख़बिरों की मुख़बरी से गिरफ्तार किए गए और जब गिरफ्तारी के बाद कहा गया कि अपनी पत्नी और बच्चों से मुलाकात कर लो तो कहा कि अब मुझे उनकी मुलाकात की ज़रूरत नहीं में उनको ख़ुदा के सुपुर्द करता हूँ और जब आदेश सुनाया गया कि आप पत्थरों से मारे जाओगे तो कहा चालीस दिन से अधिक मुर्दा नहीं रहूँगा। यह इस बात की तरफ संकेत था कि जो ख़ुदा की किताबों में लिखा गया कि मोमिन मरने से कुछ दिन बाद या बहुत चालीस दिन तक जीवित किया जाता और आसमान की तरफ उठाया जाता है। यह वही झगड़ा है जो अब तक हम और हमारे विरोधियों में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के रफअ के बारे में चला आता है। हम अल्लाह की किताब के अनुसार उनका रफअ आध्यात्मिक होने को स्वीकार करते हैं और वह अल्लाह की क़िताब का विरोध करके और ख़ुदा के आदेश

قُلۡ سُبۡحَانَ رَبِّیۡ ھَلۡ کُنۡتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوۡلًا

को पैरों के नीचे रखकर शारीरिक रफअ होने को मानते हैं और मुझे कहते हैं कि यह दज्जाल है क्योंकि लिखा है कि तीस दज्जाल आएंगे वे नहीं सोचते कि अगर तीस दज्जाल आने वाले थे तो इस हिसाब से प्रत्येक दज्जाल के मुक़ाबला में तीस मसीह भी तो चाहिए था यह क्या ग़जब है कि दज्जाल तो तीस आ गए मगर मसीह एक भी न आया। यह उम्मत कैसी दुर्भाग्य पूर्ण है कि इस भाग में दज्जाल ही रह गए और सच्चे मसीह का मुंह देखना अभी तक नसीब नहीं हुआ हालांकि इस्त्राईली सिलसिले में तो सैंकड़ों नबी आए थे।

अत: जिस सिलसिले में अब्दुल लतीफ जैसे सच्चे और इल्हाम पाने वाले ख़ुदा ने पैदा किए जिन्होंने जान भी इस राह में कुर्बान कर दी और ख़ुदा से इल्हाम पाकर मेरी पुष्टि की ऐसे सिलसिले पर आरोप करना क्या यह तक्वा में सम्मिलित है एक नेक प्रकृति सालेह ज्ञान वालों का एक झूठे इंसान के लिए इतना आशिकाना जोश कब हो सकता है .....

साहिबज़ादा मौलवी अब्दुल लतीफ शहीद ने अपने ख़ून के साथ सच्चाई की गवाही दी। अल इस्तकामतो फौकल करामत। मगर आजकल के अक्सर उल्मा का यह नियम है कि दो दो रुपए से उनके फतवे बदल जाते हैं और उनकी बातें ख़ुदा के डर से नहीं बल्कि नफस के जोश से होती हैं लेकिन अब्दुल लतीफ शहीद मरहूम वह सच्चा और मुत्तकी ख़ुदा का बन्दा था जिस ने ख़ुदा के रास्ते में न अपनी पत्नी की परवाह की न बच्चों की न अपनी प्रिय जान की। ये लोग हैं जो हक्कानी उलमा हैं जिनके बातें और कर्म अनुकरण के योग्य हैं। जिन्होंने अंत तक ख़ुदा की राह में अपनी सच्चाई निभाई।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 210 -213)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

122 वां जलसा सालाना कादियान 2016 ई की संक्षिप्त रिपोर्ट (शुरू जलसा से 125 वां साल)

अहमदियत के केंद्र कादियान दारुल अमान में 122 वें जलसा सालाना का सफल और मुबारक आयोजन

मुस्लिम टेलीविज़न अहमदिया द्वारा सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का जलसा सालाना में सम्मिलित लोगों से अन्तिम सत्र में ईमान वर्धक संबोधन

*** 42 देशों से मेहमानों की भागीदारी, 14,242 अहमदियत के परवानो का जलसा में शामिल होना**

*** हुज़ूर अनवर के समापन भाषण के अवसर पर लंदन में 5,230 अहमदियत के परवानों का शामिल होना**

***नमाज़ तहज्जुद* दर्स कुरआन और ज़िक्रे इलाही से परिपूर्ण माहौल * उलमाए कराम की ज्ञान वर्धक तकारीरें *जलसा सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन *महमानों की परिचयात्मक तकारीरें * देशी तथा विदेशी भाषाओं में अनुवाद *अहबाब जमाअत की जानकारी बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण मामलों में वृद्धि के लिए वृत्तचित्र और विभिन्न सूचना सम्बन्धी प्रदर्शनी का आयोजन *नए अहमदियों और मित्रों के लिए तब्लीग़ी जलसा * 26 निकाहों के एलाना *प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जलसा की व्यापक कवरेज *शान्तिमय और सुखद मौसम में जलसा की सारी कार्रवाई का पूरा होना* अलकलम परियोजना का आयोजन *जमाअत अहमदिया इंडोनेशिया से 183 व्यक्ति चार्टर्ड जहाज़ द्वारा जलसा में शामिल हुए। (भाग-4 अन्तिम भाग)**

जलसा मसतूरात

दिनांक 27 दिसंबर 2016 को नमाज़े ज़ुहर के बाद दोपहर अढ़ाई बजे लजना इमा अल्लाह ने अपना अलग सत्र आयोजित किया जिसकी अध्यक्षता श्रीमती शमीम अख्तर ज्ञानी साहिबा सदर लजना इमा अल्लाह भारत की । तिलावत क़ुरआन आदरणीया तहमीदह उम्र साहिबा ने की। जिस का उर्दू अनुवाद आदरणीया अमतुश्शाफी रूमी साहिबा जनरल सैक्रेटरी लजना इमा अल्लाह भारत ने पेश किया। आदरणीया नय्यरह तनवीर साहिबा ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कलाम मीठी आवाज़ से पढ़ कर सुनाया। इज्लास की पहली तकरीर आदरणीया बुशरा पाशा साहिबा मानद सदस्य कार्यकारिणी लजना इमा अल्लाह भारत ने " पर्दा की फरज़ियत और महत्त्व, कुरान और हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के ख़ुल्फ़ा कराम के उपदेशों की रोशनी में " विषय पर। आदरणीया कुदसिया हबीब साहिबा ने एक नअत मीठी आवाज़ से पढ़ी। जलसा की दूसरी तकरीर सुश्री शमीम अख्तर ज्ञानी साहिबा सदर लजना इमा अल्लाह भारत ने " शादी ब्याह और रिश्ता नाता से संबंधित कुरआन और हदीस हज़रत मसीह मौऊद और ख़लफ़ा कराम के उपदेश " विषय पर की। सामूहिक दुआ के साथ इस सत्र संपन्न हुआ।

(1) अलकलम परियोजना:

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह बेनसरहिल अज़ीज़ की आज्ञा से दिनांक 23 दिसंबर 2016 ई जुम्मा मुबारक शाम 4 बजे आदरणीय मौलाना जलालुद्दीन नय्यर साहिब सदर सदर अंजुमन अहमदिया कादियानी की अध्यक्षता में अहमदिया केन्द्रीय लायब्रेरी कादियान में "अलकलम परियोजना " का उद्घाटन हुआ । तिलवत कुरआन आदरणीय मौलवी मुरशिद अहमद डार साहिब मुरब्बी सिलसिला ने की। उसके बाद आदरणीय मौलवी इनायत उल्लाह साहिब एडीशनल कुरआन इस्लाह व इर्शाद तालीमुल कुरआन व वक्फ आरज़ी कादियान व प्रशासन अलकलम परियोजना ने "अलकलम प्रोजैक्ट" का परिचय करवाया। इस परियोजना के अधीन पूरा क़ुरआन हस्तलिखित प्रति के रूप में प्रकाशित करने का कार्यक्रम है। यह परियोजना 23 दिसंबर 2016 से1 जनवरी 2017, 10 दिन तक जारी रही। इस दौरान 1284 दोस्तों ने 1463 आयतें लिखीं।

(2) ख़िदमते ख़लक विभाग:

ख़िदमते ख़लक के अधीन जलसा सालाना के दिनों में दारुल मसीह, केंद्रीय मस्जिदों, बहश्ती मक़बरा, जलसा गाह, मुहल्ला अहमदिया कादियान में प्रवेश करने वाले मार्गों, सभी ठहरने के निवासों, केंद्रीय पुस्तकालय जहां अलकलम परियोजना का आयोजन किया गया और एम टी ए की बिल्डिंग आदि स्थानों पर ख़ुद्दाम व अंसार सेवकों ने हर समय डयूटियाँ दीं। नमाज़ों के समय मस्जदों और गलियों और सड़कों में यातायात कंट्रोल करने लिए भी ख़ुद्दाम ने ड्यूटी दी। एवाने ख़िदमत में पंजीकरण विभाग के अंतर्गत पुराने कार्ड पर होलोग्राम लगाए गए और नए अस्थायी कार्ड भी बनाए गए। सारे भारत से 720 ख़ुद्दाम और 86 अनसार सेवक ख़ूब मेहनत और परिश्रम के साथ दिन रात ड्यूटी देते रहे। अल्हम्दो लिल्लाह अला ज़ालेक। सेना और पुलिस के 15 अहमदी युवाओं ने भी जो जलसा में शामिल होने के लिए आए थे, अपनी सेवाएं प्रदान कीं और मेहनत से ड्यूटी दी।

(3) नज़ामतें और निवास स्थल:

इस साल जलसा की व्यवस्था और मेहमानों के ठहरने तथा खाने के लिए 27 नज़ामतें 21 निवास स्थल बनाए गए और 4 लंगर ख़ाने जारी किए गए। कादियान के सभी हलक़ो में घरों में ठहरने वाले मेहमानों के लिए 6 स्थानों पर "फेमलीज़" के अधीन भोजन वितरण करने के लिए प्रबंधन किया गया।

(4) ह्यूमेन्टी फर्सट:

हुज़ूर अनवर की मंजूरी से ह्यूमेन्टी फ़र्स्ट इंडिया संस्था स्थापित हो चुकी है। इसके अधीन पिछले छह-सात महीने से समाज सेवा के काम हो रहे हैं। जलसा सालाना के अवसर पर इन कार्यों की छवि के रूप में सराय वसीम के पास एक प्रदर्शनी लगाई गई। भारी संख्या में मित्रों ने उसका विज़िट किया और यथा सामर्थ्य चन्दा भी दिया।

(5) निकाहों की घोषणाएं:

जलसा सालाना के दिनों में मस्जिद अक्सा में कुल 26 निकाहों की घोषणा हुई। जिस में से 20 निकाहों की घोषणा दिनांक 27 दिसंबर 2016 ई को हुई।

(6) प्रदर्शनी:

सन 2015 में जलसा सालाना के अवसर पर दारुस्सलाम में कोठी हज़रत नवाब मोहम्मद अली खान, जहां हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल ने अपने जीवन के अंतिम दिन गुज़ारे, को रेनीवैट करके " अन्नूर नुमायश" के नाम से एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया था इस साल भी दिनांक 23 दिसंबर 2016 से 2 जनवरी 2017 ई तक कुल 10 दिन यह प्रदर्शनी लगाई गई। जिसमें जमाआत अहमदिया के इतिहास के विभिन्न युगों को चित्रों और पोस्टरों के माध्यम से दिखाया गया है। दैनिक सुबह 8 बजे से रात 9 बजे तक यह प्रदर्शनी आने वालों के लिए खुली रही।

इसके अतिरिक्त नज़ारत नश्रो इशाअत के अधीन नश्रो इशाअत की बिल्डिंग परिसर में ही कुरान प्रदर्शनी और मख़ज़ने तस्वीरे विभाग की स्थापना है। जलसा के दिनों में अक्सर मित्रों ने इन प्रदर्शनियों को भी देखा।

(7) तरबियती जलसा और मजलिस सवाल-जवाब:

दिनांक 26 दिसंबर 2016 सोमवार जलसा सालाना कादियाने के पहले दिन नमाज़ मग़रिब व इशा के बाद मस्जिद अनवार क्षेत्र दारुल अनवार में आदरणीय मौलाना मोहम्मद हमीद कौसर साहब की अध्यक्षता में नए अहमदियों और जमाअत से सम्पर्क रखने वाले मित्रों के लिए एक तब्लीग़ी जलसा आयोजित किया गया। इस जलसा का उद्देश्य यह था कि जलसा में शामिल होने वाले नए अहमदी और दोस्त प्रश्न करके अपने संदेह दूर कर सकें। तथा उन सवालों के उत्तर भी प्राप्त कर सकें जो उन्हें दूसरे मुसलमान करते रहते हैं और जिनके उत्तर में उन्हें दिक्कत पेश आती है। अत: मस्जिद अनवार में लगभग पांच सौ नए अहमदियों और मित्र अपने क्षेत्र के मुबल्लिग़ों और मुअल्लिमों और पुराने अहमदी दोस्तों के साथ हाज़िर हुए और अपने सवाल पेश करके उनके उत्तर प्राप्त किए। जलसा का आरम्भ कुरआन की तिलावत से हुआ जो आदरणीय मौलवी मुरीद अहमद डार साहब मुबल्लिग़ सिलसिला ने की। आदरणीय रिज़वान अहमद जफर साहब ने पढ़ी नज़्म पढ़ी। उसके बाद आदरणीय मौलाना मोहम्मद हमीद कौसर साहिब ने उद्घाटन भाषण दिया। जिसमें आप ने अहमदियों और

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

कुछ लोग मानते हैं कि धर्म और मज़हब उनकी स्वतंत्रता छीनता है और उन पर प्रतिबंध लगाता है लेकिन अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है कि यह धर्म अर्थात् इस्लाम जो तुम्हारे लिए नाज़िल किया गया है इसमें कोई ऐसा आदेश नहीं कि जो तुम्हें मुश्किल में डाले बल्कि छोटे से छोटे आदेश से लेकर बड़े से बड़े आदेश तक हर आदेश रहमत और बरकत का कारण है।

कुछ बातें ज़ाहिर में छोटी लगती हैं लेकिन समय के साथ उन्हें मामूली समझने की वजह से उनके परिणाम अत्यंत भयानक रूप धारण कर लेते हैं। अतः एक मोमिन को कभी भी किसी भी आदेश को छोटा नहीं समझना चाहिए।

अगर हम ने धर्म पर कायम रहना है तो फिर हमें धार्मिक शिक्षाओं का पालन करना होगा। अगर हम ने यह घोषणा करनी है कि हम मुसलमान हैं और धर्म पर कायम हैं तो प्रतिबंध भी आवश्यक है। अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात पर, आज्ञाओं का पालन करना भी आवश्यक है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि लज्जा ईमान का हिस्सा है। इसलिए लज्जा वाला लिबास और पर्दा हमारे ईमान को बचाने के लिए आवश्यक है।

हर अहमदी लड़की लड़के और पुरुष और महिला को अपनी लज्जा की गुणवत्ता को ऊंचा करते हुए समाज के गंद से बचने की कोशिश करनी चाहिए न कि यह प्रश्न या इस बात पर हीन भावना का ख्याल कि पर्दा क्यों आवश्यक है? क्यों हम टाइट जीनस और ब्लाउज नहीं पहन सकतीं।? यह माता पिता और विशेष रूप से माताओं का काम है कि छोटी उम्र से ही बच्चों को इस्लामी शिक्षा और समाज की बुराइयों के बारे में बताएं तभी हमारी नस्लें धर्म पर कायम रह सकेंगी और तथाकथित विकसित समाज के ज़हर से सुरक्षित रह सकेंगी। इन देशों में रहकर माता पिता को बच्चों को धर्म से जोड़ने और लज्जा की रक्षा के लिए बहुत अधिक जिहाद की ज़रूरत है। इसके लिए अपने नमूने भी दिखाने होंगे।

हमेशा याद रखना चाहिए कि हया के लिए हया वाली पोशाक चाहिए और पर्दे का इस समय प्रचलित तरीका हया वाले कपड़े का ही एक हिस्सा है

इस्लाम विरोधी शक्तियां बड़ी तीव्रता से ज़ोर लगा रही हैं कि धार्मिक शिक्षाओं और परंपराओं को मुसलमानों के अंदर से हटाया जाए। ये लोग इस कोशिश में हैं कि धर्म को अभिव्यक्ति और अंतरात्मा स्वतंत्रता के नाम पर ऐसे तरीके से हटाया जाए कि उन पर कोई आरोप न आए कि देखो हम जबरन धर्म को समाप्त कर रहे हैं और यह सहानुभूति करने वाले समझे जाएं।

इस समय इस्लाम के पुनर्जागरण का काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के सुपुर्द है और इसके लिए हमें भरपूर कोशिश करनी होगी और कष्ट भी उठाने पड़ेंगे। हम ने लड़ाई नहीं करनी लेकिन हिक्मत से उन लोगों से बात भी करनी है अगर आज हम उनकी एक बात मानेंगे जिसका संबंध हमारी धार्मिक शिक्षा से है तो धीरे धीरे हमारी बहुत सी बातों पर बहुत सारी शिक्षाओं पर प्रतिबंध लगते चले जाएंगें। हमें दुआओं पर भी ज़ोर देना चाहिए कि अल्लाह तआला उनकी शैतानी चालों का मुकाबला करने के लिए हमें हिम्मत और ताकत दे और मदद भी करे। अगर हम सच्चाई पर कायम हैं और वास्तव में हैं तो एक दिन हमारी सफलता भी निश्चित है। अतः दुआओं के साथ हम ने दुनिया को कायल करना है और इस के लिए अल्लाह तआला से दृढ़ सम्पर्क बनाने की ज़रूरत है।

हम अहमदियों को यह हमेशा याद रखना कि यह समय बहुत ख़तरनाक समय है शैतान हर तरफ से ज़ोरदार हमला कर रहा है अगर मुसलमानों और विशेष रूप से अहमदी मुसलमानों, पुरुषों और महिलाओं युवाओं सब ने धार्मिक मूल्यों को बनाए रखने की कोशिश न की तो हमारे बचने की कोई गारंटी नहीं है।

इस्लाम की तरक्की के लिए हर वह चीज़ ज़रूरी है जिस का ख़ुदा तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आदेश दिया है। पर्दे की सख़्तियां केवल महिलाओं के लिए नहीं हैं। इस्लाम की पाबन्दियां केवल महिलाओं के लिए नहीं बल्कि पुरुषों और महिलाओं दोनों को आदेश है। अल्लाह तआला ने पहले पुरुषों को लज्जा और पर्दे का तरीका बताया था।

अगर महिलाओं को पुरुषों के साथ तैराकी की अनुमति नहीं है तो मर्दों को भी नहीं है कि महिलाओं में जाकर स्विमिंग करें।

अतः यह प्रतिबंध केवल महिला के लिए नहीं बल्कि पुरुषों के लिए भी हैं। पुरुषों को अपनी नज़रें महिलाओं को देखकर नीचे करने का आदेश देकर महिला की इज्ज़त की स्थापना की गई है। इसलिए इस्लाम का हर आदेश ज्ञान से भरा हुआ है और बुराइयों की संभावना को दूर करता है।

मैं मुरब्बियान और उनकी पत्नियों से भी कहूंगा कि वह भी अपने कपड़े और अपनी नज़रों में बहुत अधिक ध्यान रखें। उन के नमूने जमाअत देखती है मुरब्बी और मुबल्लिग़ की पत्नी भी मुरब्बी होती है और उसे अपने हर मामला में उच्च मिसाल कायम करनी चाहिए। अल्लाह तआला करे कि हमारे पुरुष भी और हमारी औरतें भी हया के उच्च मानकों को स्थापित करने वाले हों और इस्लामी आदेशों का हर तरह हम पालन करने वाले हों।

पर्दे के बारे में कुरआन मजीद और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों की रोशनी में इस्लामी शिक्षाओं का वर्णन और बे-पर्दगी के नुकसान से आगाह करते हुए मुसलमानों को अपनी जिम्मेदारियों को समझने और अदा करने की विशेष रूप से नसीहत।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 13 जनवरी 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

कुछ लोग मानते हैं कि धर्म और मज़हब उनकी स्वतंत्रता छीनता है और उन पर प्रतिबंध लगाता है लेकिन अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है कि وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ (अल्हज्ज 79) अर्थात् धर्म की शिक्षा में तुम पर कोई तंगी का पहलू नहीं डाला गया बल्कि शरीयत का उद्देश्य तो मनुष्य के बोझों को कम करना और केवल इतना ही नहीं बल्कि उसे हर प्रकार के दुःख और खतरों से बचाना है। अतः अल्लाह तआला के इस फरमान में स्पष्ट किया गया है कि यह धर्म अर्थात् इस्लाम जो तुम्हारे लिए नाज़िल किया गया है इसमें कोई ऐसा

आदेश नहीं कि जो तुम्हें मुश्किल में डाले बल्कि छोटे से छोटे आदेश से लेकर बड़े से बड़े आदेश तक हर आदेश रहमत और बरकत का कारण है। इसलिए मनुष्य की सोच ग़लत है अल्लाह तआला का कलाम ग़लत नहीं हो सकता। अगर अल्लाह तआला की सृष्टि हो कर हम उसकी आज्ञाओं पर नहीं चलेंगे तो अपना नुकसान करेंगे। यदि मनुष्य अक्ल नहीं करेगा तो शैतान जिसने पहले दिन से यह वादा किया हुआ है कि मैं इंसानों को गुमराह करके नुकसान पहुँचाऊँगा वह इंसान को विनाश के गड्ढे में गिराएगा। तो अगर इस हमले से बचना है तो अल्लाह तआला की आज्ञाओं को मानना चाहिए। कुछ बातें ज़ाहिर में छोटी लगती हैं लेकिन समय के साथ उन्हें मामूली समझने की वजह से उनके परिणाम अत्यंत भयानक रूप धारण कर लेते हैं। अत: एक मोमिन को कभी भी किसी भी आदेश को छोटा नहीं समझना चाहिए।

आजकल हम देखते हैं कि दुनिया की बहुमत धर्म से दूर हट गई है इसलिए उनका बुराई और अच्छाई की गुणवत्ता भी बदलते जा रहे हैं। जैसे इस युग में हम देखते हैं कि स्वतंत्रता और फैशन के नाम पर महिलाओं पुरुषों में नंगापन आम हो रहा है। विकसित होने की निशानी यह है कि खुलेआम अभद्रता की जाए। लज्जा नाम की कोई चीज नहीं रही और ज़ाहिर है इसका असर तो हमारे बच्चों और बच्चियों पर भी होगा जो यहाँ रहते हैं उनके साथ और कुछ हद तक हो भी रहा है।

कुछ बच्चियां जब जवानी में कदम रखने लगती हैं मुझे लिखती हैं कि इस्लाम में पर्दा क्यों आवश्यक है? क्यों हम तंग जीनस और ब्लाउज पहन कर बिना बुर्के के घर या कोट के घर से बाहर नहीं जा सकतीं? क्यों हम यहाँ यूरोप की आज़ाद लड़कियों जैसे कपड़े नहीं पहन सकतीं।?

पहली बात तो हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि अगर हम ने धर्म पर कायम रहना है तो फिर हमें धार्मिक शिक्षाओं का पालन करना होगा। अगर हम ने यह घोषणा करनी है कि हम मुसलमान हैं और धर्म पर कायम हैं तो प्रतिबंध भी आवश्यक है। अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात पर, आज्ञाओं का पालन करना भी आवश्यक है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि लज्जा ईमान का हिस्सा है।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल ईमान बाब अमूरुल ईमान हदीस 9)

इसलिए लज्जा वाला लिबास और पर्दा हमारे ईमान को बचाने के लिए आवश्यक है। अगर विकसित देश स्वतंत्रता और विकास के नाम पर अपनी लज्जा को समाप्त कर रहे हैं तो इस का कारण यह है कि यह धर्म से दूर हट गए हैं। इसलिए एक अहमदी बच्ची जिसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना है उस ने यह वादा किया है कि धर्म को दुनिया में प्राथमिकता दूंगी। एक अहमदी बच्चे ने जिस ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना है एक अहमदी व्यक्ति ने पुरुष ने स्त्री ने माना है वह धर्म को दुनिया में प्राथमिकता देने का वादा दिया है और यह प्राथमिकता देना तभी होगा जब धर्म की शिक्षा के अनुसार कार्य करेंगे। यह भी हमारा सौभाग्य है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें हर बात खोल खोलकर बयान फ़रमा दी है। इसलिए इस बे पर्दगी और बेहयाई के बारे में एक जगह का वर्णन करते हुए फरमाते हैं कि

"यूरोप की तरह बे पर्दगी पर भी लोग ज़ोर दे रहे हैं लेकिन यह कदापि उचित नहीं। यही महिलाओं की स्वतंत्रता दुराचार तथा अनाचार की जड़ है। जिन देशों ने इस प्रकार की स्वतंत्रता को उचित रखा है ज़रा उनकी नैतिक हालत का अनुमान करो। अगर उसकी स्वतंत्रता और बे पर्दगी से उनकी शुद्धता और पवित्रता बढ़ गई है तो हम मान लेंगे कि हम ग़लत हैं लेकिन यह बात बहुत साफ है कि जब आदमी और औरत जवान हों और स्वतंत्रता और बे पर्दगी भी हो तो उनके संबंध कितने ख़तरनाक होंगे। बुरी नज़र डालना और नफस की भावनाओं से अक्सर अभिभूत हो जाना मनुष्य की विशेषता है। फिर जिस हालत में पर्दा उचित न हो और दुराचार और अनाचार के प्रतिबद्ध हो जाते हैं तो स्वतंत्रता में क्या कुछ न होगा। पुरुषों की स्थिति का अनुमान करो कि वे कैसे बेलगाम घोड़े की तरह हो गए हैं। न ख़ुदा का भय है न परलोक का ईमान है सांसारिक सुख को अपना उपास्य बना रखा है। इसलिए सबसे प्रथम चाहिए कि इस आज़ादी और बे पर्दगी से पहले पुरुषों की नैतिक हालत सुधारो अगर यह सही हो जाए और पुरुषों में कम से कम इतनी ताकत हो कि वे अपने स्वाभाविक भावनाओं से पराजित न हो सकें तो उस समय इस बहस को छेड़ो कि क्या पर्दा चाहिए कि नहीं। वरना वर्तमान स्थिति में इस बात पर ज़ोर देना कि स्वतंत्रता और बे पर्दगी हो मानो बकरियों को शेरों के आगे रख देना है। इन लोगों को क्या हो गया है कि किसी बात के परिणाम पर विचार नहीं करते। कम से कम अपने कांशनस से ही काम लें कि क्या पुरुषों की हालत सुधरी है कि महिलाओं को पर्दा के बिना उनके सामने रखा जाए।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 134-135 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

आजकल समाज में जो बुराइयां हमें नज़र आ रही हैं यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक एक शब्द की पुष्टि करती हैं। परन्तु हर अहमदी लड़की लड़के और पुरुष और महिला को अपनी लज्जा की गुणवत्ता को ऊंचा करते हुए समाज के गंद से बचने की कोशिश करनी चाहिए न कि यह प्रश्न या इस बात पर हीन भावना का ख्याल कि पर्दा क्यों आवश्यक है? क्यों हम टाइट जीनस और ब्लाउज नहीं पहन सकतीं।? यह माता पिता और विशेष रूप से माताओं का काम है कि छोटी उम्र से ही बच्चों को इस्लामी शिक्षा और समाज की बुराइयों के बारे में बताएं तभी हमारी नस्लें धर्म पर कायम रह सकेंगी और तथाकथित विकसित समाज के ज़हर से सुरक्षित रह सकेंगी। इन देशों में रहकर माता पिता को बच्चों को धर्म से जोड़ने और लज्जा की रक्षा के लिए बहुत अधिक जिहाद की ज़रूरत है। इसके लिए अपने नमूने भी दिखाने होंगे।

फिर इसी तरह एक बच्ची ने पिछले दिनों मुझे पत्र लिखा कि मैं बहुत पढ़ लिख गई हूँ और मुझे बैंक में अच्छा काम मिलने की उम्मीद है। मैं पूछना चाहती हूं कि क्या अगर वहाँ हिजाब लेने और पर्दा करने पर प्रतिबंध हो कोट भी नहीं पहन सकती हूँ तो क्या मैं यह काम कर सकती हूँ? काम से बाहर निकलूंगी तो हिजाब ले लूँगी। कहती है कि मैंने सुना था कि आप ने कहा था कि काम वाली लड़कियों को उनके कार्य स्थल पर अपना बुर्का, हिजाब उतार कर काम कर सकती हैं। इस बच्ची में कम से कम इतनी नेकी है कि उसने यह भी लिख दिया कि आप मना करेंगे तो काम नहीं करूंगी। यह एक नहीं कई लड़कियों के सवाल हैं यह इसलिए बयान कर रहा हूँ पहली बात तो यह कि मैंने अगर कहा था तो डॉक्टरों को कुछ परिस्थितियों में मजबूरी होती है। वहाँ पारंपरिक बुर्का या हिजाब पहन कर काम नहीं हो सकता। जैसे आप्रेशन करते हुए। इन का लिबास वहां ऐसा होता है कि सिर पर भी टोपी होती है मुखौटा भी होता है, ढीले कपड़े होता है, इसके अलावा अगर डॉक्टर भी पर्दे में काम कर सकती हैं। रबवा में हमारी डॉक्टरज़ थीं। डॉक्टर फहमीदा को हमेशा हम ने पर्दे में देखा है। डॉक्टर नुसरत जहां थीं बड़ा पका पर्दा करती थीं। यहाँ भी उन्होंने अध्ययन किया और हर साल अपनी योग्यता को नई रिसर्च के मुताबिक ढालने के लिए तदनुसार करने के लिए यहाँ लंदन भी आती थीं लेकिन हमेशा पर्दे में रहें बल्कि वह पर्दे की आवश्यकता से अधिक पाबन्द थीं। न उन पर यहां किसी ने काम पर आपत्ति की न उनकी व्यावसायिकता में इससे कोई असर पड़ा। ऑपरेशन भी उन्होंने बहुत बड़े बड़े किए तो अगर नीयत हो तो धर्म की शिक्षा पर चलने के रास्ते निकल आते हैं।

इसी तरह मैंने अनुसंधान करने वालियों को कहा था कि कोई बच्ची अगर इतनी योग्य है कि अनुसंधान कर रही है और वहाँ प्रयोगशाला में उनको विशेष कपड़े पहनने पड़ता है तो वहाँ वह इस माहौल का लिबास पहन सकती हैं वहां भी उन्होंने टोपी आदि पहनी होती है बेशक हिजाब न लें लेकिन बाहर निकलते ही वह पर्दा होना चाहिए जिसका इस्लाम ने आदेश दिया है। बैंक की नौकरी ऐसी कोई नौकरी नहीं है कि जिससे मानवता की सेवा हो रही हो। इसलिए साधारण नौकरियों के लिए हिजाब उतारने की अनुमति नहीं दी जा सकती, जबकि नौकरी भी ऐसी जो लड़की हर रोज़ कपड़े और मेकअप में हो कोई विशेष कपड़े वहाँ नहीं पहना जाना। इसलिए हमेशा याद रखना चाहिए कि हया के लिए हया वाली पोशाक चाहिए और पर्दे का इस समय प्रचलित तरीका हया वाले कपड़े का ही एक हिस्सा है अगर पर्दे में नरमी करेंगी तो अपने लज्जा वाले लिबास में भी कई बहाने करके परिवर्तन पैदा कर लेंगी और फिर समाज में रंगीन हो जाएंगी। जहां पहले ही अभद्रता बढ़ती चली जा रही है। दुनिया तो पहले ही इस बात के पीछे पड़ी हुई है कि कैसे वे लोग जो अपने धर्म की शिक्षाओं पर चलने वाले हैं और विशेष रूप से मुसलमान हैं उन्हें कैसे धर्म से दूर किया जाए। स्विट्जरलैंड में एक लड़की ने मुकदमा किया कि मैं लड़कों के साथ स्विमिंग में हिजाब महसूस करती हूं। स्कूल मुझे बाध्य करता है कि मिक्स स्विमिंग होगी मुझे यह अनुमति दी जाए कि अलग लड़कियों के साथ स्विमिंग करूं। ह्यूमन राइट्स वाले जो मानव अधिकारों के बड़े वाहक बने फिरते हैं उन्होंने कहा कि ठीक है तुम चाहती हो कि अलग करो यह तुम्हारा निजी अधिकार तो है लेकिन यह कोई ऐसा बड़ा मुद्दा नहीं है, जिसके लिए तुम्हारे पक्ष में फैसला दिया जाए। जहां इस्लामी शिक्षा और महिला की लज्जा का मामला आया तो वहां मानवाधिकार संगठन भी बहाने बनाने लग जाते हैं। तो ऐसी अवस्था में अहमदियों को पहले से बढ़कर सावधान रहना चाहिए। अगर स्कूलों में छोटे बच्चों की लिए स्विमिंग आवश्यक है

कुछ देशों में तो बच्चियां पूरे कपड़े पहनकर अर्थात जो स्विमिंग का वस्त्र पूरा होता है जिसे आजकल बुरकीनो कहते हैं वह पहनकर स्विमिंग करें। लेकिन छोटे बच्चे ताकि उन्हें भावना पैदा हो कि हम ने भी लज्जा वाले कपड़े रखने हैं। माता-पिता भी बच्चों को समझाएं कि लड़कों और लड़कियों की अलग स्विमिंग होनी चाहिए इसके लिए कोशिश भी करनी चाहिए।

इस्लाम विरोधी शक्तियां बड़ी तीव्रता से ज़ोर लगा रही हैं कि धार्मिक शिक्षाओं और परंपराओं को मुसलमानों के अंदर से हटाया जाए। ये लोग इस कोशिश में हैं कि धर्म को अभिव्यक्ति और अंतरात्मा स्वतंत्रता के नाम पर ऐसे तरीके से हटाया जाए कि उन पर कोई आरोप न आए कि देखो हम जबरन धर्म को समाप्त कर रहे हैं और यह सहानुभूति करने वाले समझे जाएं। शैतान की तरह मीठी शैली में धर्म पर हमले हों लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि इस समय इस्लाम के पुनर्जागरण का काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के सुपुर्द है और इसके लिए हमें भरपूर कोशिश करनी होगी और कष्ट भी उठाने पड़ेंगे। हम ने लड़ाई नहीं करनी लेकिन हिक्मत से उन लोगों से बात भी करनी है अगर आज हम उनकी एक बात मानेंगे जिसका संबंध हमारी धार्मिक शिक्षा से है तो धीरे धीरे हमारी बहुत सी बातों पर बहुत सारी शिक्षाओं पर प्रतिबंध लगते चले जाएंगें। हमें दुआओं पर भी ज़ोर देना चाहिए कि अल्लाह तआला उनकी शातिर चाल का मुकाबला करने के लिए हमें हिम्मत और ताकत दे और मदद भी करे। अगर हम सच्चाई पर कायम हैं और वास्तव में हैं तो एक दिन हमारी सफलता भी निश्चित है। इस्लाम की शिक्षाओं ने ही दुनिया पर हावी आना है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह कहते हैं कि

"सच में एक साहस और दलेरी होती है। झूठा इंसान कायर होता है। वह जिस का जीवन नापाकी और गंदे गुनाहों से लिप्त है वह हमेशा डरता रहता है और मुकाबला नहीं कर सकता। एक सच्चे इंसान की तरह हिम्मत और साहस से अपनी प्रामाणिकता व्यक्त नहीं कर सकता और अपनी पवित्रता का सुबूत नहीं दे सकता। सांसारिक मामलों में ही विचार करके देख लो कि कौन है जो ज़रा सी भी ख़ुदा ने अच्छा सम्मान प्रदान किया हो और उसके हासिद न हों। प्रत्येक अच्छे सम्मान वाले का हासिद ज़रूर हो जाते हैं और साथ ही लगे रहते हैं। यही हाल धर्मिक मामलों का है। शैतान भी सुधार का दुश्मन है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि अपना हिसाब साफ रखे ख़ुदा से मामला सही रखे। ख़ुदा को ख़ुश करे फिर किसी न ख़ौफ़ खाए और न किसी की परवाह करे। ऐसे मामलों से परहेज़ करे जिनसे ख़ुद ही अज़ाब पाने वाला हो जाए मगर यह सब कुछ भी ग़ैब के समर्थन और इलाही तौफीक के अतिरिक्त नहीं हो सकता। केवल मानवीय कोशिश कुछ बना नहीं सकती जब तक ख़ुदा तआला की कृपा शामिल न हो। وَ خُلِقَ الۡاِنۡسَانُ ضَعِیۡفًا (अन्निसा 29) इंसान कमज़ोर है। ग़लतियों से भरा हुआ है कठिनाइयां चारों ओर से घेरे हुए हैं। इसलिए दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला अच्छाई की तौफ़ीक़ अता करे और ग़ैब के समर्थन और फज़ल के फैज़ान का वारिस बना दे।

(मल्फूज़ात भाग 10 पृष्ठ 252 प्रकाशन 1985 ई यु. के)

इसलिए दुआओं के साथ हम दुनिया को आश्वस्त करना है इसके लिए ख़ुदा तआला से पुख्ता संबंध बनाने की जरूरत है।

हमें याद रखना चाहिए कि दूसरे धर्म हमेशा के लिए नहीं हैं अपने समय पर आते हैं और अपने समय की प्रशिक्षण की आवश्यकताएं पूरी कीं और खत्म हो गए तभी तो उनकी धार्मिक पुस्तकों में भी कई कांट छंटनी हो चुकी है और परिवर्तन हो चुके हैं लेकिन इस्लाम जो अब तक सुरक्षित है लेकिन इनमें इस्लाम हमेशा रहने के लिए है कुरआन की शिक्षाएं क़यामत तक के लिए हैं इसलिए हमें बिना किसी हीन भावना के अपनी शिक्षाओं का पालन करने की कोशिश करनी चाहिए और उस पर बने रहना चाहिए और दूसरों भी बताना चाहिए कि तुम जो बातें करते हो ये अल्लाह तआला की इच्छा के खिलाफ हैं और विनाश की ओर ले जाने वाली हैं।

इस्लाम कोई ऐसा धर्म नहीं जो इंसान को ग़लत प्रकार के प्रतिबंध में जकड़ देता है बल्कि यथा अनुसार इस में शिक्षाओं में नरमी के पहलू भी हैं जैसा कि मैंने बताया कि कुछ मरीज़ ऐसे हैं कि पुरुष डॉक्टर को दिखाना होता है, मरीज़ के लिए को परदा कोई सख्ती नहीं है। मानव जीवन को बचाने और मानव जीवन को संकट से निकालने मूल उद्देश्य पहला लक्ष्य है तभी तो पलटा और मजबूरी की हालत में मृत और सूअर के मांस खाने की भी अनुमति है, लेकिन सिर्फ जीवन बचाने के लिए। इसी तरह दवाईयों में अल्कोहल भी उपयोग हो जाता है लेकिन बहरहाल जिस तरीके पर शैतानी ताकतें हमें चलाना चाहती हैं इसका उद्देश्य यह है कि धीरे धीरे धर्म की सीमाएं समाप्त कर दी जाएं और धर्म का सफाया कर दिया जाए और इस बात के ख़िलाफ हम अहमदियों ने ही जिहाद करना है और यह तभी संभव है जब इस्लामी शिक्षाओं को हम हर चीज़ महत्त्व देंगे और ख़ुदा तआला के आगे झुकगें ताकि अल्लाह तआला की मदद से हमारी उपलब्धियां हों।

मसीह मौऊद के ज़माने में तलवार का जिहाद नहीं है बल्कि आत्म सुधार का जिहाद है। इन विकसित देशों में रहने वाले मुसलमान विशेष रूप से दुनिया में रहने वाले अहमदी मुसलमान ही इसके लिए मेरे मुखातिब हैं। उन्हें देश से वफ़ा और देश के लिए बलिदान और देश के किसी भी रूप में विकास के लिए उच्च स्थान पर पहुंचने की कोशिश करनी चाहिए और जब यह होगा तो शैतानी ताकतों के मुंह बंद हो जाएंगे कि यह मुसलमान वे हैं जो देश व राष्ट्र सुधार के वास्तविक मानकों की ओर ले जाने वाले हैं न कि देश के ख़िलाफ कुछ करने वाले। हम ने उन लोगों और सरकारों को समझाना है कि अगर हम अपनी धार्मिक शिक्षा के कारण अपने आप को किसी बात के लिए पाबन्द करते हैं या किसी चीज़ से पाबन्द करते हैं और अपने ऊपर प्रतिबंध लगाते हैं तो सरकारों या अदालतों का कोई काम नहीं कि हस्तक्षेप करें। इस से बैचेनियां पैदा होंगी। स्थानीय लोगों और प्रवासियों में दूरियां पैदा होंगी। यद्यपि कि जिन्हें ये प्रवासी कहते हैं उन्हें भी इन देशों में कुछ को तो दूसरी तीसरी पीढ़ी है। हां अगर देश को कोई नुकसान पहुंचा रहा है, देश से कोई विश्वासघात कर रहा है, देश में झूठ और नफरतें फैला रहा है तो फिर सरकारों को भी अधिकार है कि पकड़ें और सज़ाएं भी दें लेकिन यह कोई अधिकार नहीं कि किसी धार्मिक शिक्षा पर अमल करने से रोक कर कहें कि अगर तुम यह करोगे तो इसका मतलब यह है कि देश के माहौल में तुम अवशोषित नहीं हो रहे।

हम अहमदियों को यह हमेशा याद रखना कि यह समय बहुत ख़तरनाक समय है शैतान हर तरफ से ज़ोरदार हमला कर रहा है अगर मुसलमानों और विशेष रूप से अहमदी मुसलमानों, पुरुषों और महिलाओं युवाओं सब ने धार्मिक मूल्यों को बनाए रखने की कोशिश न की तो हमारे बचने की कोई गारंटी नहीं है। हम दूसरों से बढ़कर अल्लाह तआला की पकड़ में होंगे कि हम ने सच्चाई को समझा, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें समझाया और हम फिर भी अमल न किया। तो अगर हम ने अपने आप को ख़त्म होने से बचाना है तो फिर हर इस्लामी शिक्षा के साथ विश्वास कर के दुनिया में रहने की ज़रूरत है। यह न समझें कि यह विकसित देशों का यह विकास हमारे विकास और जीवन की गारंटी है और उसके साथ चलने में ही हमारा अस्तित्व है। इन विकसित देशों का विकास अपने चरम पर पहुंच चुका है और अब जो उनकी नैतिक अवस्था है चरित्र खराब करने वाली हरकतें हैं ये चीज़ें उन्हें पतन की ओर ले जा रही हैं और इसके लक्षण प्रकट हो चुके हैं। अल्लाह तआला की नाराज़गी को यह आवाज़ दे रहे हैं और ख़ुद के विनाश को बुला रहे हैं तो ऐसे में मानवीय सहानुभूति के अधीन हमने उन्हें सही रास्ता दिखाकर बचाने की कोशिश करनी है बजाय इसके कि उनके रंग में रंगीन हो जाएं अगर इन लोगों का सुधार न हुआ जो उनके अहंकार और धर्म से दूरी के कारण ज़ाहिरी तौर पर बहुत मुश्किल दिखता है तो भविष्य में दुनिया की तरक्की में वे जातियां योगदान करेंगी जो नैतिक और धार्मिक मूल्यों को कायम रखने वाली होंगी।

इसलिए जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि हमें विशेष रूप से युवाओं को अल्लाह तआला की शिक्षा पर विचार करने की ज़रूरत है। दुनिया से प्रभावित होकर उसके पीछे चलने की बजाय दुनिया को अपने पीछे चलाने की जरूरत है। जैसा कि पर्दे और कपड़े के बारे में मैंने बात शुरू की थी इस बारे में भी बात कहना चाहता हूँ और अफसोस से कहना चाहता हूँ कि कुछ लोग कहते हैं कि इस्लाम और अहमदियत की तरक्की के लिए केवल पर्दा ही ज़रूरी बात है कोई कहता है कि यह शिक्षा अब पुरानी हो चुकी है और अगर हम ने दुनिया का मुकाबला करना है तो इन बातों को छोड़ना होगा (नाईज़ बिल्लाह) लेकिन ऐसे लोगों पर स्पष्ट हो कि अगर दुनिया वालों के पीछे चलते रहे और उनकी तरह जीवन गुज़ारते रहे तो फिर दुनिया से मुकाबला की बजाय ख़ुद दुनिया में डूब जाएंगे। नमाज़ें भी धीरे धीरे ज़ाहरी हालत में ही रह जाएंगी या और कोई नेकियाँ हैं या धर्म का पालन कर रहे हैं तो वह भी ज़ाहरी शक्ल में रह जाएगा और फिर धीरे धीरे वह भी खत्म हो जाएगा।

अत: अल्लाह तआला के किसी भी आदेश को मामूली नहीं समझना चाहिए यह बड़े भय का स्थान है। इस्लाम की तरक्की के लिए हर वह चीज़ ज़रूरी है जिस का ख़ुदा तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आदेश दिया है। पर्दे की सख़्तियां केवल महिलाओं के लिए नहीं हैं। इस्लाम की पाबन्दियां केवल महिलाओं के लिए नहीं बल्कि पुरुषों और महिलाओं दोनों को आदेश है। अल्लाह

तआला ने पहले पुरुषों को लज्जा और पर्दे का तरीका बताया था। इसलिए फरमाया कि

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَ يَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ

(अन्नूर 31)

मोमिनों को कह दे कि अपनी आंखें नीची रखें और अपने शर्म के स्थानों की रक्षा क्या करें। यह बात उनके लिए अधिक पवित्रता का कारण है। बेशक अल्लाह तआला जो वे करते हैं उससे हमेशा सूचित रहता है।

अल्लाह तआला ने मोमिनों को पहले कहा "गज़ बसर" से काम लो। क्यों? क्योंकि "ज़ालेक अज़क लकुम।" क्योंकि यह बात पवित्रता के लिए आवश्यक है अगर पवित्रता नहीं तो ख़ुदा नहीं मिलता। इसलिए महिलाओं के पर्दे से पहले मर्दों को कह दिया कि हर एसी चीज़ से बचो जिस से तुम्हारी भावनाऐं भड़क सकती हैं। महिलाओं को खुली आंखों से देखना, उनमें मिलना(mix up) होना बुरा फिल्में देखना, ना महरमों से फेसबुक पर या किसी अन्य स्रोत से चैट आदि करना लिए ये चीजें पवित्र नहीं रहतीं। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बारे में कई जगह खुलकर नसीहत फ़रमाई है। एक जगह आप फरमाते हैं कि

"यह ख़ुदा का ही कलाम है जिस ने अपने खुले और बहुत स्पष्ट बयान से हम को हमारे प्रत्येक कथनी और करनी और हरकत और आराम में निश्चित सीमा पर स्थापित किया और मानवता के शिष्टाचार और पवित्रता का तरीका सिखाया। वही है जिसने आंख और कान और ज़बान आदि अंगों की सुरक्षा के लिए कमाल ताकीद से कहा। قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَ يَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ अर्थात मोमिनों को चाहिए कि वह अपनी आँखें और कान और लज्जा के स्थानों को ना महरमों से बचाएं और प्रत्येक ना देखने योग्य और ना सुन्ने योग्य और ना करने योग्य कामों से बचें कि यह तरीका उन के भीतर पवित्रता का कारण होगा अर्थात उनके दिल विभिन्न प्रकार की नफस की भावनाओं से सुरक्षित रहेंगे क्योंकि अक्सर नफसानी भावनाओं को हरकत देने वाले और जानवरों वाली शक्तियों को फित्ना में डालने वाले यही अंग हैं। अब देखिए कि कुरआन शरीफ ने ना महरमों से बचने के लिए कैसी ताकीद फ़रमाई और कैसे खोलकर बयान किया कि ईमानदार लोग अपनी आँखें और कान और लज्जा के स्थानों को जब्त में रखें और अशुद्धता के स्थानों से रोकते रहें।"

(बरीाहीन अहमदिया रूहानी खज़ायन भाग 1 पृष्ठ 209 हाशिया)

फिर "गज़ बसर" को स्पष्ट करते हुए आप फ़रमाते हैं।

"सुप्त दृष्टि से उनुचित स्थान पर नज़र डालने से अपने आप को बचा लेना और दूसरी देखने का लिए जायज़ चीजों को देखना इस पद्धति को अरबी में "गज़ बसर" कहते हैं। (अर्थात आधी खुली आंखों से जो चीज़ें देखने वाली नहीं हैं उन्हें सिर्फ देखना और नज़र बचा लेना और दूसरी जो वैध चीज़ें हैं उन्हें खोलकर आँखें देखना इसे अरबी में "गज़ बसर" कहते हैं।) और प्रत्येक परहेज़गार जो अपने मन को पवित्र रखना चाहता है उसे नहीं चाहिए कि हैवानों की तरफ चाहे बिना किसी सीमा के नज़र उठा कर देख लिया करे बल्कि उसके लिए उसे सभ्यता के जीवन में "गज़ बसर" की आदत डालना चाहिए और यह वह मुबारक आदत है जिससे उस की यह भौतिक अवस्था एक भारी "ख़ुलक"(गुण) के रंग में आ जाएगी और उसकी सभ्यता की ज़रूरत में भी फर्क नहीं पड़ेगा। यही वह ख़ुलक है जिसे इहसान और इफ्फत (पवित्रता) कहते हैं।"

(इस्लामी उसूल की फलासफी रूहानी ख़ज़ायन भाग 10 पृष्ठ 344)

फिर एक जगह आपने अधिक विस्तार से बयान फरमाया कि

"मोमिनों को कह दे कि नामहरम और अनुचित स्थान पर देखने से अपनी आंखें इतनी बंद रखें कि पूरी सफाई से चेहरा नज़र न आ सके और न चेहरा पर खुली हुई और बिना रोक के नज़र पड़ सके और इस बात के लिए पाबन्द रहें कि हरगिज़ आंख को पूरे तौर पर खोलकर न देखें न काम दृष्टि से और न बिना काम दृष्टि से क्योंकि ऐसा करना अंत में ठोकर का कारण है अर्थात बे कैदी की दृष्टि से परम पवित्र स्थिति सुरक्षित नहीं रह सकती और अंत में परीक्षा सम्मुख आती है और मन शुद्ध नहीं हो सकता जब तक आंख शुद्ध न हो और वह सब से पवित्र स्थान जिस पर सच्चाई के इच्छुक के लिए कदम मारना उचित है नहीं हो सकता। और इस आयत में भी शिक्षा है कि शरीर के उन सभी छेदों को सुरक्षित रखें जिनकी राह से बुराई प्रवेश कर सकती है। छेद के शब्द में जो ऊपर वर्णित आयत में वर्णन किया गया है काम के उपकरण और कान और नाक और मुंह सब सम्मलित हैं। अब देखो कि यह सब शिक्षा किस शान और स्तर की है जो किसी पक्ष पर उचित और अनुचित रूप से सीमा से बढ़ने या कम होने पर ज़ोर नहीं डाला गया और हकीमाना मध्यवर्ती हालत से काम लिया गया है। और इस आयत का पढ़ने वाला तुरन्त शीघ्र पता कर लेगा कि इस आदेश से जो खुले खुले नज़र डालने की आदत मत डालो। मतलब है कि ताकि लोग किसी समय फित्ना में न पड़ जाएं और दोनों पक्ष मर्द और औरत में से कोई पक्ष ठोकर न खावे।

(तिर्याकुल कुलूब रूहानी ख़ज़ायन भाग 15 पृष्ठ 164-165)

अत: यह है इस्लाम की शिक्षा मरदों के कि उन्हें पहले हर तरह बाध्य किया गया है फिर महिलाओं को आदेश दिया है कि उनके सावधानियों के बाद भी तुम ने भी अपने पर्दे का ख्याल रखना है और इन देशों में जहां बिल्कुल ही निर्लज्जता है हम कैसे कह सकते हैं कि पर्दे की ज़रूरत नहीं है। बे हिजाबी और दोस्तियाँ कई बुराइयां पैदा कर रही हैं उनसे बचने के लिए हमें बहुत कोशिश करनी चाहिए। इससे यह भी स्पष्ट हो गया कि अगर महिलाओं को पुरुषों के साथ तैराकी की अनुमति नहीं है तो मर्दों को भी नहीं है कि महिलाओं में जाकर स्विमिंग करें।

अत: यह प्रतिबंध केवल महिला के लिए नहीं बल्कि पुरुषों के लिए भी हैं। पुरुषों को अपनी नज़रें महिलाओं को देखकर नीचे करने का आदेश देकर महिला की इज्ज़त की स्थापना की गई है। इसलिए इस्लाम का हर आदेश ज्ञान से भरा हुआ है और बुराइयों की संभावना को दूर करता है।

जर्मनी में पिछले जलसा सालाना में मैंने महिलाओं में, महिलाओं और पुरुषों के अंतर और कर्तव्यों और उनके काम तथा अर्थात प्रत्येक के जो अलग काम हैं तथा महिलाओं के अधिकारों की बात की तो एक जर्मन महिला आई हुई थीं। उन्होंने उस दौरान पूरा भाषण सुना तो कहने लगीं कि पहले मैं समझती थी कि इस्लाम महिलाओं के अधिकार छीन लेता है लेकिन आज आपकी बातें सुनकर मुझे पता चला कि इस्लाम महिलाओं के अधिकार और उसका आदर और सम्मान अधिक बारीकी में जाकर बयान करता है और स्थापित करता है। इसलिए किसी अहमदी लड़की या औरत को एक आदमी किसी तरह हीन भावना का शिकार होने की जरूरत नहीं है। इस्लाम की शिक्षा ही है जिसने दुनिया को शांतिपूर्ण और अल्लाह तआला की तरफ लाने वाला बनाना है। दुनिया को एक समय में एहसास होगा कि इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं कि इस्लाम की शिक्षा पर ही विचार करें और पालन करें। पुरुषों को यह आदेश देने के बाद कि अपनी आंखें नीची रखो औरत की इज्ज़त स्थापित करो, फिर महिला को विस्तार से आदेश दिया कि तुम ने भी अपनी नज़रें नीची रखना हैं और पर्दा कैसे करना है और किस किस से करना है। अगर तुम इन बातों का पालन करोगी तो सफल हो जाएगा। अंत में अल्लाह तआला ने यह फरमाया कि पर्दा और विनम्रता तुम्हारी सफलता की निशानी है। तुम्हारी दुनिया और परलोक संवर जाएगा। अत: फरमाया कि وَ قُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَ يَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَ لَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَ لْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۪ وَ لَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآئِهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ اُولِي الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ ۪ وَ لَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ؕ وَ تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (अन्नूर 32) कि और मोमिन महिलाओं से कह दे कि वह अपनी आंखें नीची रखा करें अपने लज्जा के स्थानों की रक्षा करें और अपनी सुन्दरता को प्रकट न करें, सिवाय इसके कि इसमें से अपने आप दिखाई दे अपने गलों पर अपनी ओढ़नियाँ डाल लिया करें और अपनी सुन्दरता प्रकट न करें मगर अपने पतियों के लिए या अपने बापों या अपने पतियों के बापों या अपने बेटों के लिए या अपने पतियों को बेटों के लिए या अपने भाइयों या अपने भाइयों के बेटों या अपनी बहनों के बेटों या अपनी महिलाओं या अपने अधीनस्थ पुरुषों के लिए या पुरुषों में से ऐसे कर्मचारियों के लिए जो कोई काम की आवश्यकता नहीं रखते या ऐसे बच्चों के लिए जो महिलाओं की लज्जा के स्थानों से अनजान हैं और वे अपने पैर इस तरह न मारें कि लोगों पर वे प्रकट हो जाए जो महिलाएं प्राय अपनी सुन्दरता में से छिपाती हैं और हे ईमान लाने वालो ! तुम सब के सब अल्लाह तआला की तरफ तौबा करते हुए झुको ताकि तुम सफल हो जाओ।

पुरुषों की नजरें भी और महिलाओं की नजरें रखने से और पर्दा से ही सम्मान और इस्मत की रक्षा होगी महिला।। विकसित देशों में तो सम्मान और इस्मत की

सुरक्षा के मानक बदल गए हैं ना महरमों के आपस के संबंध अगर लड़का और लड़की की इच्छा से हैं तो व्यभिचार नहीं कहलाता। यह अगर मर्जी के ख़िलाफ हैं तो व्यभिचार कहलाता है। जब ऐसी गिरावटें आ जाएं तो एक मोमिन को तो अल्लाह तआला की शरण में आने के लिए बहुत अधिक दुआओं और प्रयास की ज़रूरत है।

इस्लाम की शिक्षा पर आपत्ति करने वाले कहते हैं कि औरत को हिजाब ओढ़ा कर, पर्दे का कहकर उसके अधिकार छीन लिए गए हैं और इससे कच्चे मन की लड़कियां जो हैं कई बार प्रभावित हो जाती हैं। इस्लाम पर्दे से अभिप्राय जेल में डालना नहीं लेता। घर की चारदीवारी में पत्नी को बंद करना इससे मतलब नहीं है। हां लज्जा को स्थापित करना है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि

"आजकल पर्दे पर हमले किए जाते हैं लेकिन वे नहीं जानते कि इस्लामी पर्दे से अभिप्राय कैद ख़ाना नहीं" (अर्थात जेल नहीं है) "बल्कि एक तरह की रोक है कि ग़ैर मर्द और औरत एक दूसरे को न देख सके। जब पर्दा होगा ठोकर से बचेंगे। एक इंसाफ करने वाले स्वभाव का कह सकता है कि ऐसे लोगों में जहां ग़ैर मर्द और औरत एक साथ बिना किसी झिझक तथा रुकावट के मिलें सैरें करें क्योंकर नफस की भावनाओं से विश होकर ठोकर न खाएंगे। कभी-कभी सुनने और देखने में आया है कि ऐसी क़ौमें ग़ैर पुरुष और महिला के एक मकान में अकेला रहने को हालांकि दरवाजा भी बंद हो कोई दोष नहीं समझतीं। इस मानो सभ्यता है। इन्हीं बुरे परिणामों को रोकने के लिए इस्लाम की शरीयत बनाने वाला ने वे बातें करने की अनुमति ही नहीं दी, जो किसी के ठोकर का कारण हूँ। ऐसे मौके पर कह दिया कि जहां इस तरह ग़ैर महरम मर्द औरत जमा हों तीसरा उनमें शैतान होता है। इन नापाक परिणामों पर विचार करो। जो यूरोप इस बुरी शिक्षा से भुगत रहा है। कुछ जगह पर पूरी तरह से शर्म योग्य वैश्या वृत्ति का जीवन व्यतीत किया जा रहा है। ये उन्हीं शिक्षाओं का परिणाम है अगर किसी चीज़ को ख़यानत से बचाना चाहते हो तो रक्षा करो लेकिन अगर सुरक्षा न करो और यह समझ रखो कि भले मानस लोग हैं तो याद रखो कि निश्चित रूप से वह चीज़ नष्ट होगी। इस्लामी शिक्षा कैसी अच्छी शिक्षा है कि जो आदमी औरत को अलग रखकर ठोकर से बचाया और इंसान की ज़िन्दगी हराम और कड़वी नहीं की जिसके कारण यूरोप ने आए दिन घरेलू झगड़े और आत्म हत्याएं देखीं। कुछ शरीफ महिलाओं के वैश्या जैसा जीवन व्यतीत करना एक व्यावहारिक परिणाम है उस अनुमति का जो ग़ैर औरत को देखने के लिए दी गई।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ34-35 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर पर्दे के तरीके के बारे में आपने बताया आपने बताया कि कैसे पर्दा होना चाहिए।? फरमाया कि

अल्लाह तआला फरमाता है कि "ईमानदार महिलाओं को कह दे अल्लाह तआला फरमाता है कि वह भी अपनी आँखें नामहरम पुरुषों के देखने से बचाएं और अपने कानों को भी ना महरमों से बचाएं अर्थात उनकी शहवत वाली आवाज़ न सुनें और अपने शर्म के स्थान को छिपा कर रखें और अपनी सुन्दरता के अंगों को किसी ग़ैर महरम न खोलें और अपनी ओढ़नी इस तरह सिर पर लें कि गले से होकर सिर पर आ जाए अर्थात गले और दोनों कान और सिर और कनपटियाँ सब चादर के पर्दे में रहें और अपने पैरों को ज़मीन पर नाचने वालों की तरह न मारें। यह वह उपाय है कि जिस की पाबन्दी ठोकर से बचा सकती है।"

(इस्लामी उसूल की फलासफी रूहानी ख़ज़ायन भाग 10 पृष्ठ 341-342)

यहां यह भी स्पष्ट कर दूं कि कुछ औरतें यह भी सवाल उठा देती हैं कि हम ने मेकअप क्या होता है अगर चेहरे को नकाब से ढक लें तो हमारा मेकअप ख़राब हो जाता है तो कैसे पर्दा करें। पहले तो मेकअप न करें तो फिर यह पर्दा, कम से कम पर्दा है जिस का मानदंड हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया कि चेहरा, होंठ नंगे हो सकते हैं बाकी चेहरा ढका हो।(उद्धरित रियूयू आफ रिलीजनस भाग 4 नम्बर 1 पृष्ठ 17 जनवरी 1905ई) और अगर मेकअप करना है तो बहरहाल ढकना होगा। उन्हें यह सोचना चाहिए कि अल्लाह तआला की शिक्षा पर चलते हुए अपनी सुन्दरता को छिपाने है या दुनिया को अपनी सुंदरता और अपना मेकअप दिखाना है।

जिनके सामने सुन्दरता दिखाने का आदेश है वह एक करीबी रिश्तेदार हैं बहन भाई हैं, पति है, पिता है, माँ है उनके बच्चे हैं। उनके सामने केवल यह है कि उन से पर्दा नहीं है। मैकअप आदि अगर हो सकता है तो उनके सामने तो हो सकता है इसके अतिरिक्त नहीं। सुन्दरता प्रकट करने का आदेश जिन के सामने है उन का विवरण अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में दे दिया है और सभी रिश्ते बयान कर दिए कि और यह सुन्दरता वह भी वह है जो अपने आप प्रकट होती हो अर्थात रूप है कद काठ है आदि इस प्रकार सजाना मतलब यह नहीं है कि उनके सामने भी घर में भी तंग जीनस और ब्लाउज़ पहनने के फिर रही हूँ या नंगी पोशाक हो। यह पर्दा मुहर्रम रिश्तेदारों के लिए भी है।

इसी तरह एक और बात मैं मुरब्बियान और उनकी पत्नियों से भी कहूंगा कि वह भी अपने कपड़े और अपनी नज़रों में बहुत अधिक ध्यान रखें। उन के नमूने जमाअत देखती है मुरब्बी और मुबल्लिग़ की पत्नी भी मुरब्बी होती है और उसे अपने हर मामला में उच्च मिसाल कायम करनी चाहिए। अल्लाह तआला करे कि हमारे पुरुष भी और हमारी औरतें भी हया के उच्च मानकों को स्थापित करने वाले हों और इस्लामी आदेशों का हर तरह हम पालन करने वाले हों।

☆ ☆ ☆

एलान कारकुन दर्जा दोयम (द्वितीय) सदर अंजुमन अहमदिया कादियान

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान में लिपिक के रूप में सेवा के इच्छुक दोस्तों की सूचना के लिए लिखा जाता है कि:

1-उम्मीदवार की आयु 25 वर्ष से कम होनी चाहिए और उम्मीदवार की शिक्षा कम से कम 10 + 2 सेकंड डिवीजन कम से कम 45 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों। इस से अधिक शिक्षा होने पर भी कम से कम सेकंड डिवीज़न या इस से अधिक नंबर हों।

2-जामिया अहमदिया कादियान के छात्र जो मैट्रिक पास करने के बाद जामिया अहमदिया में कम से कम दो साल का अध्ययन करके परीक्षा में सफल हो गए हों, आदरणीय प्रिंसिपल साहिब जामिया अहमदिया और नाज़िर साहिब तालीम की पुष्टि और सिफारिश के बाद नियमों के अनुसार दर्जा दोयम की परीक्षा में शामिल हो सकते हैं।

3-उम्मीदवार का अच्छी लिखाई वाला होना अनिवार्य होगा और उर्दू Inpage कंपोज़िनग जानना और गति कम से कम 25 शब्द प्रति मिनट होनी चाहिए।

4-केवल वे इच्छुक सेवा के योग्य होंगे जो सदर अंजुमन अहमदिया द्वारा लिपिकों के लिए लिए जाने वाली परीक्षा और इन्ट्रवियू में पास होंगे।

5-जो दोस्त सदर अंजुमन अहमदिया में लिपिक के रूप में सेवा के इच्छुक हों और उपरोक्त शर्तों को पूरा करते हों वे आवेदन कर सकते हैं। आवेदन फार्म दफतर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान से मंगवा लें। आप के आवेदन प्रस्तावित फार्म पूरा करके दफतर दीवान में भिजवा दें। आवेदन फार्म मिलने पर परीक्षा का आयोजन किया जाएगा। इसकी घोषणा के बाद 2 महीने के भीतर जो आवेदन आएंगे उन्हीं पर विचार होगा।

6 पाठ्यक्रम परीक्षा आयोग कार्यकर्ता दर्जा दोयम के हर भाग में सफल होना अनिवार्य है जो निम्न लिखित है।

(1) क़ुरआन करीम सादा पढ़ना। पहला पारा अनुवाद सहित

(2) चालीस जवाहर पारे, अरकाने इस्लाम, सम्पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित

(3) किश्ती नूह, बरकातुद्दुआ, धार्मिक जानकारी।

(4) अहमदियत की आस्थाओं पर लेख।

(5) नज़म दुर्रेसमीन (शान इस्लाम) (6) अंग्रेज़ी 10 + 2 की योग्यता के अनुसार

(7) हिसाब मीट्रिक के अनुसार सामान्य जानकारी।

7- लिखित परीक्षा में सफल होने वालों का इनट्रवियू होगा। सेवा के लिए इनट्रवियू में सफलता अनिवार्य है।

8- लिखित परीक्षा व इनट्रवियू दोनों में सफलता के मामले में उम्मीदवार को नूर अस्पताल कादियान से चिकित्सा निरीक्षण करना होगा और केवल वही उम्मीदवार सेवा के योग्य होंगे जो नूर अस्पताल के चिकित्सा बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ और तंदुरुस्त होंगे।

9-यदि किसी उम्मीदवार का जमाअत की किसी असामी में चुनाव होता है तो इस स्थिति में उसे कादियान में अपने आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।

10-कादियान आने जाने का सफर खर्च उम्मीदवार के स्वयं अपने होंगे।

नाज़िर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान

अधिक जानकारी के लिए संपर्क कर सकते हैं:

मोबाइल: 09815433760, 09464066686 कार्यालय: 01872-501130

E-mail: nazaratdiwanqdn@gmail.com

☆ ☆ ☆

इसी तरह एक और बात मैं मुरब्बियान और उनकी पत्नियों से भी कहूंगा कि वह भी अपने कपड़े और अपनी नज़रों में बहुत अधिक ध्यान रखें। उन के नमूने जमाअत देखती है मुरब्बी और मुबल्लिग़ की पत्नी भी मुरब्बी होती है और उसे अपने हर मामला में उच्च मिसाल कायम करनी चाहिए। अल्लाह तआला करे कि हमारे पुरुष भी और हमारी औरतें भी हया के उच्च मानकों को स्थापित करने वाले हों और इस्लामी आदेशों का हर तरह हम पालन करने वाले हों।

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 2 Thursday 16 february 2017 Issue No. 7

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

पृष्ठ 2 का शेष

ग़ैर अहमदियों के बीच मुख्य अंतर और मतभेद पर प्रकाश डाला। उसके बाद दोस्तों को सवालों का मौका दिया गया। आप के साथ आदरणीय मौलाना सुल्तान अहमद जफर साहब नाज़िम इरशाद वक्फ जदीद और आदरणीय मौलाना तनवीर अहमद ख़ादिम साहब नायब नाज़िम दावत इल्लाह उत्तर भारत ने भी दोस्तों के सवालों के जवाब दिए। यह जलसा बहुत ईमान वर्धक था जो अढ़ाई घंटे से अधिक समय तक चला।

(8) अनुवाद विभाग:

इस साल निम्नलिखित 9 भाषाओं में जलसा के भाषणों के सीधे अनुवाद का प्रबंध था। (1) अरबी (2)रूसी (3)इंडोनेशियाई (4) अंग्रेज़ी (5) मलयालम (6) तमिल (7) तेलुगू (8) बंगला (9) कनड़ा

अल्लाह तआला की कृपा से सभी भाषाओं के अनुवादकों ने मेहनत से अपने कर्तव्यों को अदा किया। जलसा के सभी कार्यक्रम और दरस हज़ूर अनवर के समापन भाषण का उक्त 9 भाषाओं में अनुवाद किया गया और बड़ी संख्या में लोगों ने अनुवाद को सुना। स्त्रियों के विशेष सत्र का भी 5 भाषाओं (अंग्रेजी, अरबी, इंडोनेशियाई, मलयालम, तमिल) में अनुवाद किया गया।

(9) प्रशिक्षण विभाग:

जलसा सालाना कादियान के दिनों में दिनांक 22 दिसंबर 2016 से 2 जनवरी 2017 ई मस्जिद अक्सा, मस्जिद मुबारक और मस्जिद अनवार स्थित मोहल्ला दारुल अनवार में जमाअत के साथ नमाज़े तहज्जुद अदा की गई। इसी तरह कादियान के अन्य मुहल्ला 7 मस्जिदों में भी जलसा सालाना के तीन दिनों में जमाअत के साथ नमाज़े तहज्जुद का आयोजन किया गया। इसी प्रकार सभी मस्जिदों में नमाज़ सुबह के बाद विशेष दर्स का प्रावधान किया गया। नमाज़ तहज्जुद के लिए दोस्तों को लाऊड स्पीकरों में दरूद शरीफ पढ़कर जगाया जाता रहा। इस विभाग के अधीन कादियान की विभिन्न गलियों और सड़कों में शिक्षण एवं प्रशिक्षण सम्बंधी सुंदर बैनर लगाए गए। इसके अलावा उर्दू और अंग्रेजी भाषा में जलसा सालाना का कार्यक्रम प्रकाशित किया गया जिस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह बेनस्रहलि अज़ीज़ के जलसा सालाना संबंधित सुनहरी उपदेश शामिल किए गए। कादियान के गली मुहल्लों में तथा विशेष रूप से अहमदिया मुहल्ला में तरबियती बैनल लगाए गए।

(10) प्रैस और मीडिया:

इस साल 11 भाषाओं के 206 अख़बारों में जलसा के बारे में 282 समाचार लेख और ख़बरें प्रकाशित हुईं। 16 विशेष स्पलीमेन्ट और 41 अख़बारों में 43 विज्ञापन प्रकाशित हुए। इसी तरह 27 समाचार चैनलों ने 29 बार जलसा की ख़बरें और कार्यक्रम प्रसारित किए। 57 रिपोर्टर जलसा की कवरेज के लिए आए जिस में से 13 रिपोर्टर पंजाब के बाहर से आए थे। जलसा सालाना के प्रचार के लिए दिल्ली, चंडीगढ़, जालंधर (पंजाब) और सोरो (ओडिशा) में प्रैस कान्फेस का आयोजन किया गया।

(रिपोर्ट: मंसूर अहमद, व्यवस्थापक विभाग रिपोर्टिंग)
(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इस्लामी नमाज़

"नमाज़ बड़ी ज़रूरी चीज़ है और मोमिन की मेराज (चरमोन्नति) है। खुदा तआला से दुआ मांगने का सर्वश्रेष्ठ साधन नमाज़ है। खुदा तआला की स्तुति करने और अपने गुनाहों के माफ़ कराने की मिश्रित सूरत का नाम नमाज़ है। उसकी नमाज़ कदापि नहीं होती जो इस उद्देश्य को सामने रख कर नमाज़ नहीं पढ़ता। अत: नमाज़ बहुत ही अछी तरह पढ़ो। खड़े हो तो इस प्रकार की तुम्हारी सूरत साफ़ बता दे, कि तुम खुदा की इताअत और फरमांबरदारी में हाथ बाँधे खड़े हो और झुको तो ऐसे, जिससे साफ़ प्रतीत हो कि तुम्हारा दिल झुकता है और सज्दा करो तो उस आदमी की भांति जिसका दिल डरता हो और नमाज़ों में अपने दीन और दुनिया के लिए दुआ करो"।

('अल हकम' 31मई 1903)

"दुआ और नमाज़ का हक़ अदा करना छोटी बात नहीं, यह तो एक मौत अपने ऊपर लादनी है। नमाज़ इस बात का नाम है कि जब इन्सान उसे अदा करता है तो यह अनुभव करे कि इस जहान से दूर जहान में पहुँच गया हूँ।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 5 पृष्ठ 319)

नमाज़ के शिष्टाचार

*वुज़ू करके नमाज़ पढने हेतु गरिमा और अदब से चल कर जाएँ । दौड़ कर नमाज़ में शामिल न हों।

*नमाज़ में जाते समय विचार विमर्श करें की कौन कौन सी नेकियों का उपहार(तोहफ़ा) ख़ुदा के सामने ले कर जा रहे हैं और किन किन गुनाहों के प्रति क्षमायाचना करनी हे।

*नमाज़ से पहले आवश्यक आदतों(मलमूत्र इत्यादि) से छुट जाना चाहिये ताकि शांति एवं एकाग्रता के साथ नमाज़ पढ़ी जा सके।

*नमाज़ बाजमाअत में सफ़ें(लाईनें)बिल्कुल सीधी होनी चाहिए,और उपस्थित लोग कंधे से कंधा मिला कर खड़े हों,बीच में स्थान शेष न हो।

*लोग जब सफें बनाएं और उन्हें अगली सफ़ो में रिक्त स्थान नज़र आए तो पहले उसे पूर्ण करें।

*नमाज़ प्रारम्भ करने से पहले "नियत-ए-नमाज़"पढ़ें।

*नमाज़ के समस्त क्रियाओं को संतोष एवं गरिमा के साथ पूर्ण करें। शीघ्रता न करें।

*नमाज़ में पढ़े जाने वाले प्रत्येक शब्द को विनम्र-ता-पूर्वक और संवार कर पढ़ें।पूरी एकाग्रता नमाज़ के शब्दों एवं उनके अर्थों को समझने में हो,कोशिश करें के मन में इधर उधर के विचार न आएं।

*नमाज़ में इधर उधर देखना, इशारा करना,बातें करना,बातें सुनना,इत्यादि व्यर्थ क्रियाएं करना मना हे ।

*नमाज़ पढ़ते समय किसी चीज़ का सहारा लेना अथवा एक ही पैर पर भार डाल कर खड़ा होना मना हे।

*नमाज़ सदैव फुर्ती एवं ध्यान से पढ़ें।सुस्ती एवं बेध्यानी से नहीं।

*बाजमाअत नमाज़ पढ़ते समय ईमाम् से पहले कोई हरकत न करें।बल्कि ईमाम् की पैरवी करें।

*नमाज़ समाप्त करने के पश्चात शीघ्रता से नहीं उठना चाहिए।बल्कि कुछ समय ज़िक्रे इलाही में व्यतीत करें।

*यदि कोई नमाज़ पढ़ रहा हे तो उसके समीप शोर करना या ऊँची आवाज़ में बात करना मना हे।

*नमाज़ तय समय पर पढ़ें।

*नमाज़-ए- जुमा से पहले ख़ुत्बा ख़ामोशी से सुनें,यदि किसी को ख़ामोश करवाना भी हो तो इशारे के साथ ख़ामोश कराएँ। खुतबे के समय तिनकों,कंक्रियों से न खेलें। क्योंकि ख़ुतबा भी नमाज़ का भाग है।

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad